لِمَنۡ عُقۡبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾ وَيَقُوۡلُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لَسۡتَ مُرۡسَلًا ؕ قُلۡ

किसे मिलता है पिछला घर[118] और काफ़िर कहते हैं तुम रसूल नहीं तुम फ़रमाओ

كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيۡدًا ۢ بَيۡنِىۡ وَبَيۡنَكُمۡ ۙ وَمَنۡ عِنۡدَهٗ عِلۡمُ الۡكِتٰبِ ﴿٤٣﴾ ع

अल्लाह गवाह काफ़ी है मुझ में और तुम में[119] और वोह जिसे किताब का इल्म है[120]

اٰياتها ٥٢ | ١٤ سُوۡرَةُ اِبۡرٰهِيۡمَ مَكِّيَّةٌ ٧٢ | ركوعاتها ٧

सूरए इब्राहीम मक्किय्या है, इस में बावन आयतें और सात रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

الٓرٰ قف كِتٰبٌ اَنۡزَلۡنٰهُ اِلَيۡكَ لِتُخۡرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوۡرِ ۙ

एक किताब है[2] कि हम ने तुम्हारी त़रफ़ उतारी कि तुम लोगों को[3] अंधेरियों से[4] उजाले में लाओ[5]

بِاِذۡنِ رَبِّهِمۡ اِلٰى صِرَاطِ الۡعَزِيۡزِ الۡحَمِيۡدِ ۙ ﴿١﴾ اللّٰهِ الَّذِىۡ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

उन के रब के हुक्म से उस की राह[6] की त़रफ़ जो इ़ज़्ज़त वाला सब ख़ूबियों वाला है अल्लाह कि उसी का है जो कुछ आस्मानों में है

وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ وَوَيۡلٌ لِّلۡكٰفِرِيۡنَ مِنۡ عَذَابٍ شَدِيۡدِ ۙ ﴿٢﴾ الَّذِيۡنَ

और जो कुछ ज़मीन में[7] और काफ़िरों की ख़राबी है एक सख़्त अ़ज़ाब से जिन्हें

يَسۡتَحِبُّوۡنَ الۡحَيٰوةَ الدُّنۡيَا عَلَى الۡاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوۡنَ عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ

आख़िरत से दुन्या की ज़िन्दगी प्यारी है और अल्लाह की राह से रोकते[8]

وَيَبۡغُوۡنَهَا عِوَجًا ؕ اُولٰٓئِكَ فِىۡ ضَلٰلٍ ۢ بَعِيۡدٍ ﴿٣﴾ وَمَاۤ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ

और इस में कजी (टेढ़ापन) चाहते हैं वोह दूर की गुमराही में हैं[9] और हम ने हर रसूल

118 : या'नी काफ़िर अ़न्क़रीब जान लेंगे कि राह़ते आख़िरत मोमिनीन के लिये है और वहां की ज़िल्लतो ख़्वारी कुफ़्फ़ार के लिये है। **119 :** जिस ने मेरे हाथों में मो'जिज़ाते बाहिरा व आयाते क़ाहिरा ज़ाहिर फ़रमा कर मेरे नबिय्ये मुरसल होने की शहादत दी। **120 :** ख़्वाह वोह उ़लमाए यहूद में से तौरैत का जानने वाला हो या नसारा में से इन्जील का आ़लिम, वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिसालत को अपनी किताबों में देख कर जानता है, इन उ़लमा में से अक्सर आप की रिसालत की शहादत देते हैं। **1 :** सूरए इब्राहीम मक्किय्या है सिवाए आयत "اَلَمۡ تَرَ اِلَى الَّذِيۡنَ بَدَّلُوۡا نِعۡمَتَ اللّٰهِ كُفۡرًا" और इस के बा'द वाली आयत के। इस सूरत में सात रुकूअ़ बावन आयतें आठ सो इक्सठ कलिमे, तीन हज़ार चार सो चौंतीस ह़र्फ़ हैं **2 :** येह क़ुरआन शरीफ़ **3 :** कुफ़्रो ज़लालत व जहलो ग़वायत (जहालत व गुमराहिय्यत) की **4 :** ईमान के **5 :** ज़ुल्मात को जम्अ़ और नूर को वाह़िद के सीग़े से ज़िक्र फ़रमाने में ईमा (इशारा) है कि दीने ह़क़ की राह एक है और कुफ़्रो ज़लालत के त़रीक़े कसीर। **6 :** या'नी दीने इस्लाम **7 :** वोह सब का ख़ालिक़ो मालिक है, सब उस के बन्दे और मम्लूक (क़ब्ज़े में हैं) तो उस की इ़बादत सब पर लाज़िम और उस के सिवा किसी की इ़बादत रवा नहीं। **8 :** और लोगों को दीने इलाही

www.dawateislami.net

رَسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ؕ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَ

उस की क़ौम ही की ज़बान में भेजा[10] कि वोह उन्हें साफ़ बताए[11] फिर अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहे और

يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٤ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى

वोह राह दिखाता है जिसे चाहे और वोही इ़ज़्ज़त हि़क्मत वाला है और बेशक हम ने मूसा को अपनी निशानियां[12]

بِاٰيٰتِنَاۤ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ۬ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ

दे कर भेजा कि अपनी क़ौम को अंधेरियों से[13] उजाले में ला और उन्हें अल्लाह के दिन

اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝٥ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى

याद दिला[14] बेशक इस में निशानियां हैं हर बड़े सब्र वाले शुक्र गुज़ार को और जब मूसा ने अपनी क़ौम

لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ

से कहा[15] याद करो अपने ऊपर अल्लाह का एह़सान जब उस ने तुम्हें फ़िरऔन वालों से नजात दी

يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ

जो तुम को बुरी मार देते थे और तुम्हारे बेटों को ज़ब्ह़ करते और तुम्हारी बेटियां ज़िन्दा रखते

क़बूल करने से मानेअ़ होते हैं **9 :** कि ह़क़ से बहुत दूर हो गए हैं। **10 :** जिस में वोह रसूल मब्ऊ़स हुवा ख़्वाह उस की दा'वत आ़म हो और दूसरी क़ौमों और दूसरे मुल्कों पर भी उस का इत्तिबाअ़ लाज़िम हो जैसा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिसालत तमाम आदमियों और जिन्नों बल्कि सारी ख़ल्क़ की त़रफ़ है और आप सब के नबी हैं जैसा कि क़ुरआने करीम में फ़रमाया गया "لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا"। **11 :** और जब उस की क़ौम अच्छी त़रह़ समझ ले तो दूसरी क़ौमों को तरजमों के ज़रीए से वोह अह़काम पहुंचा दिये जाएं और उन के मा'ना समझा दिये जाएं। **बा'ज़** मुफ़स्सिरीन ने इस आयत की तफ़्सीर में येह भी फ़रमाया है कि "قَوْمِهٖ" की ज़मीर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ राजेअ़ है और मा'ना येह हैं कि हम ने हर रसूल को सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ज़बान या'नी अ़रबी में वह़्य फ़रमाई और येह मा'ना एक रिवायत में भी आए हैं कि वह़्य हमेशा अ़रबी ज़बान ही में नाज़िल हुई फिर अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام ने अपनी क़ौमों के लिये उन की ज़बानों में तरजमा फ़रमा दिया। (اتقان، حسینی) **मस्अला :** इस से मा'लूम होता है कि अ़रबी तमाम ज़बानों में सब से अफ़्ज़ल है। **12 :** मिस्ल अ़सा व यदे बैज़ा वग़ैरा मो'जिज़ाते बाहिरा के **13 :** कुफ़्र की निकाल कर ईमान के **14 :** क़ामूस में है कि "اَيَّامُ اللّٰه" से अल्लाह की ने'मतें मुराद हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास व उबय बिन का'ब व मुजाहिद व क़तादा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) ने भी اَيَّامُ اللّٰه की तफ़्सीर (अल्लाह की ने'मतें) फ़रमाई। मुक़ातिल का क़ौल है कि اَيَّامُ اللّٰه से वोह बड़े बड़े वक़ाएअ़ (ह़ादिसात व वाक़िआ़त) मुराद हैं जो अल्लाह के अम्र से वाक़ेअ़ हुए। **बा'ज़** मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि اَيَّامُ اللّٰه से वोह दिन मुराद हैं जिन में अल्लाह ने अपने बन्दों पर इन्आ़म किये जैसे कि बनी इसराईल के लिये मन्न व सल्वा उतारने का दिन, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के लिये दरिया में रास्ता बनाने का दिन। (خازن ومدارک ومفردات راغب) इन اَيَّامُ اللّٰه में सब से बड़ी ने'मत के दिन सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की विलादत व मे'राज के दिन हैं, इन की याद क़ाइम करना भी इस आयत के हुक्म में दाख़िल है, इसी त़रह़ और बुज़ुर्गों पर जो अल्लाह तआ़ला की ने'मतें हुई या जिन अय्याम में वाक़िआ़ते अ़ज़ीमा पेश आए जैसा कि दसवीं मुह़र्रम को करबला का वाक़िअ़ए हाइला (होलनाक वाक़िआ़) इन की यादगार क़ाइम करना भी तज़्कीर ब اَيَّامُ اللّٰه में दाख़िल है, बा'ज़ लोग मीलाद शरीफ़, मे'राज शरीफ़ और ज़िक्रे शहादत के अय्याम की तख़्सीस (तारीख़ मख़्सूस करने) में कलाम करते हैं उन्हें इस आयत से नसीह़त पज़ीर होना चाहिये। **15 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات का अपनी क़ौम को येह इर्शाद फ़रमाना तज़्कीर ब اَيَّامُ اللّٰه की ता'मील है।

وَ فِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۟۶ وَ اِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَىِٕنْ شَكَرْتُمْ ع
और इस में[16] तुम्हारे रब का बड़ा फ़ज़्ल हुवा और याद करो जब तुम्हारे रब ने सुना दिया कि अगर एहसान मानोगे

لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَ لَىِٕنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ۟۷ وَ قَالَ مُوْسٰۤى اِنْ
तो मैं तुम्हें और दूंगा[17] और अगर नाशुक्री करो तो मेरा अ़ज़ाब सख़्त है और मूसा ने कहा अगर

تَكْفُرُوْۤا اَنْتُمْ وَ مَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا فَاِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۟۸ اَلَمْ
तुम और ज़मीन में जितने हैं सब काफ़िर हो जाओ[18] तो बेशक **अल्लाह** बे परवाह सब ख़ूबियों वाला है क्या

يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ ۛؕ وَ الَّذِيْنَ مِنْۢ
तुम्हें उन की ख़बरें न आईं जो तुम से पहले थे नूह की क़ौम और आ़द और समूद और जो उन के

بَعْدِهِمْ ۛؕ لَا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ ؕ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْۤا مع
बा'द हुए उन्हें **अल्लाह** ही जाने[19] उन के पास उन के रसूल रोशन दलीलें ले कर आए[20] तो वोह अपने

اَيْدِيَهُمْ فِيْۤ اَفْوَاهِهِمْ وَ قَالُوْۤا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَ اِنَّا لَفِيْ
हाथ[21] अपने मुंह की त़रफ़ ले गए[22] और बोले हम मुन्किर हैं उस के जो तुम्हारे हाथ भेजा गया और जिस राह[23] की

شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَاۤ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ۟۹ قَالَتْ رُسُلُهُمْ اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ الثلثة
त़रफ़ हमें बुलाते हो उस में हमें वोह शक है कि बात खुलने नहीं देता उन के रसूलों ने कहा क्या **अल्लाह** में शक है[24] आस्मानों

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَ يُؤَخِّرَكُمْ
और ज़मीन का बनाने वाला तुम्हें बुलाता है[25] कि तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्शे[26] और मौत के मुक़र्रर वक़्त

16 : या'नी नजात देने में **17 :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि शुक्र से ने'मत ज़ियादा होती है। शुक्र की अस्ल येह है कि आदमी ने'मत का तसव्वुर और उस का इज़्हार करे और ह़क़ीक़ते शुक्र येह है कि मुन्इ़म (ने'मत देने वाले) की ने'मत का उस की ता'ज़ीम के साथ ए'तिराफ़ करे और नफ़्स को इस का ख़ूगर बनाए, यहां एक बारीकी (अहम बात) है वोह येह कि बन्दा जब **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों और उस के त़रह त़रह के फ़ज़्लो करम व एह़सान का मुत़ालआ़ करता है तो उस के शुक्र में मश्ग़ूल होता है इस से ने'मतें ज़ियादा होती हैं और बन्दे के दिल में **अल्लाह** तआ़ला की मह़ब्बत बढ़ती चली जाती है, येह मक़ाम बहुत बरतर है और इस से आ'ला मक़ाम येह है कि मुन्इ़म की मह़ब्बत यहां तक ग़ालिब हो कि क़ल्ब को ने'मतों की त़रफ़ इल्तिफ़ात (रग़बत) बाक़ी न रहे, येह मक़ाम सिद्दीक़ों का है। **अल्लाह** तआ़ला अपने फ़ज़्ल से हमें शुक्र की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। **18 :** तो तुम ही ज़रर पाओगे और तुम ही ने'मतों से मह़रूम रहोगे। **19 :** कितने थे **20 :** और उन्हों ने मो'जिज़ात दिखाए **21 :** शिद्दते ग़ैज़ (सख़्त ग़ुस्से) से **22 :** ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि वोह ग़ुस्से में आ कर अपने हाथ काटने लगे। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि उन्हों ने किताबुल्लाह सुन कर तअ़ज्जुब से अपने मुंह पर हाथ रखे। ग़रज़ येह कोई न कोई इन्कार की अदा थी। **23 :** या'नी तौह़ीद व ईमान **24 :** क्या उस की तौह़ीद में तरद्दुद है ? येह कैसे हो सकता है उस की दलीलें तो निहायत ज़ाहिर हैं। **25 :** अपनी त़ाअ़त व ईमान की त़रफ़ **26 :** जब तुम ईमान ले आओ। इस लिये कि इस्लाम लाने के बा'द पहले के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं सिवाए हुक़ूक़े इबाद के और इसी लिये कुछ गुनाह फ़रमाया।

إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ قَالُوٓا إِنْ أَنتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۖ تُرِيدُونَ أَن تَصُدُّونَا

तक तुम्हारी ज़िन्दगी बे अ़ज़ाब काट दे बोले तुम तो हमीं जैसे आदमी हो[27] तुम चाहते हो कि हमें उस से बाज़ रखो

عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ ءَابَآؤُنَا فَأْتُونَا بِسُلْطَٰنٍ مُّبِينٍ ﴿١٠﴾ قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ

जो हमारे बाप दादा पूजते थे[28] अब कोई रोशन सनद हमारे पास ले आओ[29] उन के रसूलों ने उन से कहा[30]

إِن نَّحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦ ۖ

हम हैं तो तुम्हारी तरह इन्सान मगर अल्लाह अपने बन्दों में जिस पर चाहे एहसान फ़रमाता है[31]

وَمَا كَانَ لَنَآ أَن نَّأْتِيَكُم بِسُلْطَٰنٍ إِلَّا بِإِذْنِ ٱللَّهِ ۚ وَعَلَى ٱللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

और हमारा काम नहीं कि हम तुम्हारे पास कुछ सनद ले आएं मगर अल्लाह के हुक्म से और मुसल्मानों को अल्लाह ही पर

ٱلْمُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾ وَمَا لَنَآ أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى ٱللَّهِ وَقَدْ هَدَىٰنَا سُبُلَنَا ۚ وَ

भरोसा चाहिये[32] और हमें क्या हुवा कि अल्लाह पर भरोसा न करें[33] उस ने तो हमारी राहें हमें दिखा दीं[34] और

ع لَنَصْبِرَنَّ عَلَىٰ مَآ ءَاذَيْتُمُونَا ۚ وَعَلَى ٱللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ ٱلْمُتَوَكِّلُونَ ﴿١٢﴾ وَ

तुम जो हमें सता रहे हो हम ज़रूर इस पर सब्र करेंगे और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये और

قَالَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُم مِّنْ أَرْضِنَآ أَوْ لَتَعُودُنَّ فِى

काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा हम ज़रूर तुम्हें अपनी ज़मीन[35] से निकाल देंगे या तुम हमारे दीन

مِلَّتِنَا ۚ فَأَوْحَىٰٓ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿١٣﴾ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ

पर हो जाओ तो उन्हें उन के रब ने वह्य भेजी कि हम ज़रूर उन ज़ालिमों को हलाक करेंगे और ज़रूर हम तुम को उन के

ٱلْأَرْضَ مِنۢ بَعْدِهِمْ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِى وَخَافَ وَعِيدِ ﴿١٤﴾ وَ

बा'द ज़मीन में बसाएंगे[36] येह उस के लिये है जो[37] मेरे हुज़ूर खड़े होने से डरे और मैं ने जो अ़ज़ाब का हुक्म सुनाया है उस से ख़ौफ़ करे और

27 : ज़ाहिर में हमें अपनी मिस्ल मा'लूम होते हो, फिर कैसे माना जाए कि हम तो नबी न हुए और तुम्हें येह फ़ज़ीलत मिल गई। 28 : या'नी बुत परस्ती से 29 : जिस से तुम्हारे दा'वे की सिह्हत साबित हो। येह कलाम उन का इनाद व सरकशी से था और बा वुजूदे कि अम्बिया आयात ला चुके थे मो'जिज़ात दिखा चुके थे फिर भी उन्हों ने नई सनद मांगी और पेश किये हुए मो'जिज़ात को कल्अ़दम (ना क़ाबिले क़बूल) क़रार दिया। 30 : अच्छा येही मानो कि 31 : और नुबुव्वत व रिसालत के साथ बरगुज़ीदा करता है और इस मन्सबे अ़ज़ीम के साथ मुशर्रफ़ फ़रमाता है। 32 : वोही आ'दा का शर दफ़्अ़ करता और उस से महफ़ूज़ रखता है 33 : हम से ऐसा हो ही नहीं सकता क्यूं कि हम जानते हैं कि जो कुछ क़ज़ाए इलाही में है वोही होगा, हमें उस पर पूरा भरोसा और कामिल ए'तिमाद है। अबू तुराब رضی اللہ تعالیٰ عنہ का क़ौल है कि तवक्कुल बदन को उ़बूदिय्यत में डालना, क़ल्ब को रबूबिय्यत के साथ मुतअ़ल्लिक़ रखना, अ़ता पर शुक्र, बला पर सब्र का नाम है। 34 : और रुश्द व नजात के त़रीक़े हम पर वाज़ेह फ़रमा दिये और हम जानते हैं कि तमाम उमूर उस के क़ुदरतो इख़्तियार में हैं। 35 : या'नी अपने दियार 36 : ह़दीस शरीफ़ में है जो अपने हमसाए को ईज़ा देता है अल्लाह उस के घर का उसी हमसाए को मालिक बनाता है। 37 : क़ियामत के दिन।

اسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿١٥﴾ مِّنْ وَّرَآىِٕهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ

उन्हों ने[38] फ़ैसला मांगा और हर सरकश हटधर्म ना मुराद हुवा[39] जहन्नम उस के पीछे लगी और उसे पीप का पानी

مَّآءٍ صَدِيْدٍ ﴿١٦﴾ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ

पिलाया जाएगा ब मुश्किल उस का थोड़ा थोड़ा घूंट लेगा और गले से नीचे उतारने की उम्मीद न होगी[40] और उसे हर त़रफ़ से

كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ وَّرَآىِٕهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿١٧﴾ مَثَلُ

मौत आएगी और मरेगा नहीं और उस के पीछे एक गाढ़ा अ़ज़ाब[41] अपने रब

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ﹰاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ

से मुन्किरों का ह़ाल ऐसा है कि उन के काम हैं[42] जैसे राख कि उस पर हवा का सख़्त झोंका आया आंधी

عَاصِفٍ ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ

के दिन में[43] सारी कमाई में से कुछ हाथ न लगा येही है दूर की

الْبَعِيْدُ ﴿١٨﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ

गुमराही क्या तू ने न देखा कि अल्लाह ने आस्मान व ज़मीन ह़क़ के साथ बनाए[44] अगर

يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٩﴾ وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿٢٠﴾ وَ

चाहे तो तुम्हें ले जाए[45] और एक नई मख़्लूक़ ले आए[46] और येह[47] अल्लाह पर कुछ दुश्वार नहीं और

بَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْۤا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا

सब अल्लाह के ह़ुज़ूर[48] अ़लानिया ह़ाज़िर होंगे तो जो कमज़ोर थे वोह[49] बड़ाई वालों से कहेंगे[50] हम तुम्हारे ताबेअ़ थे

38 : या'नी अम्बिया ने अल्लाह तआ़ला से मदद त़लब की या उम्मतों ने अपने और रसूलों के दरमियान अल्लाह तआ़ला से 39 : मा'ना येह हैं कि अम्बिया की नुसरत फ़रमाई गई और उन्हें फ़त्ह़ दी गई और ह़क़ के मुआनिद, सरकश, काफ़िर ना मुराद हुए और उन के ख़लास (छुटकारे) की कोई सबील न रही। 40 : ह़दीस शरीफ़ में है कि जहन्नमी को पीप का पानी पिलाया जाएगा जब वोह मुंह के पास आएगा तो उस को बहुत ना गवार मा'लूम होगा जब और क़रीब होगा तो उस से चेहरा भुन जाएगा और सर तक की खाल जल कर गिर पड़ेगी जब पियेगा तो आंतें कट कर निकल जाएंगी। (अल्लाह की पनाह) 41 : या'नी हर अ़ज़ाब के बा'द उस से ज़ियादा शदीद व ग़लीज़ अ़ज़ाब होगा। (نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ عَذَابِ النَّارِ وَمِنْ غَضَبِ الْجَبَّارِ) 42 : जिन को वोह नेक अ़मल समझते थे जैसे कि मोह़ताजों की इमदाद, मुसाफ़िरों की इआ़नत और बीमारों की ख़बर गीरी वग़ैरा। चूंकि ईमान पर मब्नी नहीं इस लिये वोह सब बेकार हैं और उन की ऐसी मिसाल है 43 : और वोह सब उड़ गई और उस के अज्ज़ा मुन्तशिर हो गए और उस में से कुछ बाक़ी न रहा, येही ह़ाल है कुफ़्फ़ार के आ'माल का कि उन के शिर्क व कुफ़्र की वज्ह से सब बरबाद और बात़िल हो गए 44 : इन में बड़ी ह़िक्मतें हैं और इन की पैदाइश अ़बस (बेकार) नहीं है। 45 : मा'दूम कर दे 46 : बजाए तुम्हारे जो फ़रमां बरदार हो, उस की क़ुदरत से येह क्या बईद है जो आस्मान व ज़मीन पैदा करने पर क़ादिर है 47 : मा'दूम करना और मौजूद फ़रमाना 48 : रोज़े क़ियामत 49 : और दौलत मन्दों और बा असर लोगों की इत्तिबाअ़ में उन्हों ने कुफ़्र इख़्तियार किया था 50 : कि दीन व ए'तिक़ाद में।

www.dawateislami.net

فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍؕ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا

क्या तुम से हो सकता है कि अल्लाह के अ़ज़ाब में से कुछ हम पर से टाल दो[51] कहेंगे अल्लाह हमें हिदायत

اللّٰهُ لَهَدَیْنٰكُمْؕ سَوَآءٌ عَلَیْنَاۤ اَجَزِعْنَاۤ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِیْصٍ ﴿۲۱﴾ ع

करता तो हम तुम्हें करते[52] हम पर एक सा है चाहे बे क़रारी करें या सब्र से रहें हमें कहीं पनाह नहीं

وَ قَالَ الشَّیْطٰنُ لَمَّا قُضِیَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَ

और शैत़ान कहेगा जब फ़ैसला हो चुकेगा[53] बेशक अल्लाह ने तुम को सच्चा वा'दा दिया था[54] और

وَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْؕ وَ مَا كَانَ لِیَ عَلَیْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّاۤ اَنْ دَعَوْتُكُمْ

मैं ने जो तुम को वा'दा दिया था[55] वोह मैं ने तुम से झूटा किया और मेरा तुम पर कुछ क़ाबू न था[56] मगर येही कि मैं ने तुम को[57] बुलाया

فَاسْتَجَبْتُمْ لِیْۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِیْ وَ لُوْمُوْۤا اَنْفُسَكُمْؕ مَاۤ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَ مَاۤ

तुम ने मेरी मान ली[58] तो अब मुझ पर इल्ज़ाम न रखो[59] ख़ुद अपने ऊपर इल्ज़ाम रखो न मैं तुम्हारी फ़रियाद को पहुंच सकूं न

اَنْتُمْ بِمُصْرِخِیَّؕ اِنِّیْ كَفَرْتُ بِمَاۤ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُؕ اِنَّ الظّٰلِمِیْنَ

तुम मेरी फ़रियाद को पहुंच सको वोह जो पहले तुम ने मुझे शरीक ठहराया था[60] मैं उस से सख़्त बेज़ार हूं बेशक ज़ालिमों

لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۲۲﴾ وَ اُدْخِلَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ

के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है और वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वोह बाग़ों में दाख़िल किये जाएंगे

تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْؕ تَحِیَّتُهُمْ فِیْهَا

जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहें अपने रब के हुक्म से उस में उन के मिलते वक़्त का

51 : येह कलाम उन का तौबीख़ व इनाद के त़ौर पर होगा कि दुन्या में तुम ने गुमराह किया था और राहे हक़ से रोका था और बढ़ बढ़ कर बातें किया करते थे अब वोह दा'वे क्या हुए अब इस अ़ज़ाब में से ज़रा सा तो टालो ! काफ़िरों के सरदार इस के जवाब में **52 :** जब ख़ुद ही गुमराह हो रहे थे तो तुम्हें क्या राह दिखाते, अब ख़लासी की कोई राह नहीं न काफ़िरों के लिये शफ़ाअ़त। आओ रोएं और फ़रियाद करें, पांच सो बरस फ़रियाद व ज़ारी करेंगे और कुछ काम न आएगी तो कहेंगे कि अब सब्र कर के देखो शायद इस से कुछ काम निकले, पांच सो बरस सब्र करेंगे वोह भी काम न आएगा तो कहेंगे कि **53 :** और हिसाब से फ़रागत हो जाएगी। जन्नती जन्नत का और दोज़ख़ी दोज़ख़ का हुक्म पा कर जन्नत व दोज़ख़ में दाख़िल हो जाएंगे और दोज़ख़ी शैत़ान पर मलामत करेंगे और उस को बुरा कहेंगे कि बद नसीब तू ने हमें गुमराह कर के इस मुसीबत में गिरिफ़्तार किया तो वोह जवाब देगा कि **54 :** कि मरने के बा'द फिर उठना है और आख़िरत में नेकियों और बदियों का बदला मिलेगा अल्लाह का वा'दा सच्चा था सच्चा हुवा **55 :** कि न मरने के बा'द उठना, न जज़ा, न जन्नत, न दोज़ख़ **56 :** न मैं ने तुम्हें अपनी इत्तिबाअ़ पर मजबूर किया था या येह कि मैं ने अपने वा'दे पर तुम्हारे सामने कोई हुज्जत व बुरहान पेश नहीं की थी। **57 :** वस्वसे डाल कर गुमराही की त़रफ़ **58 :** और बिग़ैर हुज्जत व बुरहान के तुम मेरे बहकाए में आ गए बा वुजूदे कि अल्लाह तआला ने तुम से फ़रमा दिया था कि शैत़ान के बहकाए में न आना और उस के रसूल उस की त़रफ़ से दलाइल ले कर तुम्हारे पास आए और उन्हों ने हुज्जतें पेश कीं और बुरहानें क़ाइम कीं तो तुम पर ख़ुद लाज़िम था कि तुम उन का इत्तिबाअ़ करते और उन के रोशन दलाइल और ज़ाहिर मो'जिज़ात से मुंह न फेरते और मेरी बात न मानते और मेरी त़रफ़ इल्तिफ़ात न करते मगर तुम ने ऐसा न किया **59 :** क्यूं कि मैं दुश्मन

www.dawateislami.net

سَلٰمٌ ﴿٢٣﴾ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ

इक्राम सलाम है[61] क्या तुम ने न देखा **अल्लाह** ने कैसी मिसाल बयान फ़रमाई पाकीज़ा बात की[62] जैसे पाकीज़ा दरख़्त

اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّ فَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ ﴿٢٤﴾ تُؤْتِيْۤ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍۭ بِاِذْنِ

जिस की जड़ क़ाइम और शाख़ें आस्मान में हर वक़्त अपना फल देता है अपने रब के

رَبِّهَا ؕ وَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَ مَثَلُ

हुक्म से[63] और **अल्लाह** लोगों के लिये मिसालें बयान फ़रमाता है कि कहीं वोह समझें[64] और गन्दी

كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ اِۨجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا

बात[65] की मिसाल जैसे एक गन्दा पेड़[66] कि ज़मीन के ऊपर से काट दिया गया अब उसे

مِنْ قَرَارٍ ﴿٢٦﴾ يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ

कोई क़ियाम नहीं[67] **अल्लाह** साबित रखता है ईमान वालों को हक़ बात[68] पर दुन्या की ज़िन्दगी

الدُّنْيَا وَ فِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَ يُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙ۫ وَ يَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ﴿٢٧﴾ ع

में[69] और आख़िरत में[70] और **अल्लाह** ज़ालिमों को गुमराह करता है[71] और **अल्लाह** जो चाहे करे

हूं और मेरी दुश्मनी ज़ाहिर है और दुश्मन से ख़ैर ख़्वाही की उम्मीद रखना ही हमाक़त है तो **60 :** **अल्लाह** का उस की इबादत में (خازن) **61 :** **अल्लाह** तआला की तरफ़ से और फ़िरिश्तों की तरफ़ से और आपस में एक दूसरे की तरफ़ से। **62 :** या'नी कलिमए तौहीद की **63 :** ऐसे ही कलिमए ईमान है कि इस की जड़ क़ल्बे मोमिन की ज़मीन में साबित और मज़बूत होती है और इस की शाख़ें या'नी अमल आस्मान में पहुंचते हैं और इस के समरात बरकत व सवाब हर वक़्त हासिल होते हैं। हदीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अस्हाबे किराम से फ़रमाया : वोह दरख़्त बताओ जो मोमिन के मिस्ल है उस के पत्ते नहीं गिरते और वोह हर वक़्त फल देता है (या'नी जिस तरह मोमिन के अमल अकारत नहीं होते और उस की बरकतें हर वक़्त हासिल रहती हैं) सहाबा ने फ़िक्रें कीं कि ऐसा कौन सा दरख़्त है जिस के पत्ते न गिरते हों और उस का फल हर वक़्त मौजूद रहता है। चुनान्चे जंगल के दरख़्तों के नाम लिये जब ऐसा कोई दरख़्त ख़याल में न आया तो हुज़ूर से दरयाफ़्त किया, फ़रमाया : वोह खजूर का दरख़्त है। हज़रते इब्ने उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने अपने वालिदे माजिद हज़रते उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से अर्ज़ किया कि जब हुज़ूर ने दरयाफ़्त फ़रमाया था तो मेरे दिल में आया था कि येह खजूर का दरख़्त है लेकिन बड़े बड़े सहाबा तशरीफ़ फ़रमा थे मैं छोटा था इस लिये मैं अदबन ख़ामोश रहा, हज़रते उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि अगर तुम बता देते तो मुझे बहुत ख़ुशी होती। **64 :** और ईमान लाएं क्यूं कि मिसालों से मा'ना अच्छी तरह ख़ातिर गुज़ीं (ज़ेहन नशीन) हो जाते हैं **65 :** या'नी कुफ़्री कलाम **66 :** मिस्ल इन्दिराइन (एक फल) के जिस का मज़ा कड़वा, बू ना गवार या मिस्ले लहसन के बदबूदार **67 :** क्यूं कि जड़ उस की ज़मीन में साबित व मुस्तह्कम नहीं शाख़ें उस की बुलन्द नहीं होतीं येही हाल है कुफ़्री कलाम का कि उस की कोई अस्ल साबित नहीं और कोई हुज्जत व बुरहान नहीं रखता जिस से इस्तिहकाम (मज़बूती) हो, न उस में कोई ख़ैरो बरकत कि वोह बुलन्दिये क़बूल पर पहुंच सके। **68 :** या'नी कलिमए ईमान **69 :** कि वोह इब्तिला (आज़्माइश) और मुसीबत के वक़्तों में भी साबिर व क़ाइम रहते हैं और राहे हक़ व दीने क़वीम से नहीं हटते हत्ता कि उन की हयात का ख़ातिमा ईमान पर होता है। **70 :** या'नी क़ब्र में कि अव्वल मनाज़िले आख़िरत है, जब मुन्कर नकीर आ कर उन से पूछते हैं कि तुम्हारा रब कौन है, तुम्हारा दीन क्या है और सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तरफ़ इशारा कर के दरयाफ़्त करते हैं कि इन की निस्बत तू क्या कहता है? तो मोमिन इस मन्ज़िल में ब फ़ज़्ले इलाही साबित रहता है और कह देता है कि मेरा रब **अल्लाह** है, मेरा दीन इस्लाम और येह मेरे नबी हैं मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم, **अल्लाह** के बन्दे और उस के रसूल। फिर उस की क़ब्र वसीअ कर दी जाती है और उस में जन्नत की हवाएं और ख़ुश्बूएं आती हैं और वोह मुनव्वर कर दी जाती है और आस्मान से निदा होती है कि मेरे बन्दे ने सच कहा। **71 :** वोह क़ब्र में मुन्कर नकीर को जवाब सहीह नहीं दे सकते और हर सुवाल के जवाब में

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّاَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ

क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन्हों ने अल्लाह की ने'मत नाशुक्री से बदल दी[72] और अपनी क़ौम को तबाही के घर

الْبَوَارِ ﴿۲۸﴾ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ؕ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿۲۹﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا

ला उतारा वोह जो दोज़ख़ है उस के अन्दर जाएंगे और क्या ही बुरी ठहरने की जगह और अल्लाह के लिये बराबर वाले ठहराए[73]

لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ ﴿۳۰﴾ قُلْ

कि उस की राह से बहकावें तुम फ़रमाओ[74] कुछ बरत लो कि तुम्हारा अन्जाम आग है[75] मेरे उन

لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّ

बन्दों से फ़रमाओ जो ईमान लाए कि नमाज़ क़ाइम रखें और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में छुपे और

عَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ﴿۳۱﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ

ज़ाहिर ख़र्च करें उस दिन के आने से पहले जिस में न सौदागरी होगी[76] न याराना[77] अल्लाह है जिस

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ

ने आस्मान और ज़मीन बनाए और आस्मान से पानी उतारा तो उस से कुछ फल

الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ

तुम्हारे खाने को पैदा किये और तुम्हारे लिये कश्ती को मुसख़्ख़र किया कि उस के हुक्म से दरिया में चले[78]

وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ﴿۳۲﴾ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ وَ

और तुम्हारे लिये नदियां मुसख़्ख़र कीं[79] और तुम्हारे लिये सूरज और चांद मुसख़्ख़र किये जो बराबर चल रहे हैं[80] और

यही कहते हैं हाए हाए मैं नहीं जानता। आस्मान से निदा होती है मेरा बन्दा झूटा है इस के लिये आग का फ़र्श बिछाओ, दोज़ख़ का लिबास पहनाओ, दोज़ख़ की त़रफ़ दरवाज़ा खोल दो। उस को दोज़ख़ की गरमी और दोज़ख़ की लपट पहुंचती है और क़ब्र इतनी तंग हो जाती है कि एक त़रफ़ की पस्लियां दूसरी त़रफ़ आ जाती हैं, अ़ज़ाब करने वाले फ़िरिश्ते उस पर मुक़र्रर किये जाते हैं जो उसे लोहे के गुरज़ों से मारते हैं। (اَعَاذَنَا اللّٰهُ تَعَالٰى مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَثَبَّتَنَا عَلَى الْاِيْمَان) 72 : बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में है कि उन लोगों से मुराद कुफ़्फ़ारे मक्का हैं और वोह ने'मत जिस की शुक्र गुज़ारी उन्हों ने न की वोह अल्लाह के ह़बीब हैं सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कि अल्लाह तआ़ला ने इन के वुजूद से इस उम्मत को नवाज़ा और इन की ज़ियारत सरापा करामत की सआ़दत से मुशर्रफ़ किया, लाज़िम था कि इस ने'मते जलीला का शुक्र बजा लाते और इन का इत्तिबाअ़ कर के मज़ीद करम के मूरिद (क़ाबिल) होते। बजाए इस के उन्हों ने नाशुक्री की और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का इन्कार किया और अपनी क़ौम को जो दीन में उन के मुवाफ़िक़ थे दारुल हलाक (या'नी दोज़ख़) में पहुंचाया। 73 : या'नी बुतों को उस का शरीक किया 74 : ऐ मुस्त़फ़ा ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) इन कुफ़्फ़ार से कि थोड़े दिन दुन्या की ख़्वाहिशात को 75 : आख़िरत में। 76 : कि ख़रीदो फ़रोख़्त या'नी माली मुआ़वज़े और फ़िद्ये ही से कुछ नफ़्अ़ उठाया जा सके 77 : कि इस से नफ़्अ़ उठाया जाए बल्कि बहुत से दोस्त एक दूसरे के दुश्मन हो जाएंगे। इस आयत में नफ़्सानी व त़ब्ई़ दोस्ती की नफ़ी है और ईमानी दोस्ती जो मह़ब्बते इलाही के सबब से हो वोह बाक़ी रहेगी जैसा कि सूरए ज़ुख़रुफ़ में फ़रमाया : ''اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَئِذٍۭ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ'' । 78 : और उस से तुम फ़ाएदा उठाओ 79 : कि उन से काम लो। 80 : न थकें न रुकें तुम

سَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ﴿٣٣﴾ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ؕ وَاِنْ

तुम्हारे लिये रात और दिन मुसख़्ख़र किये[81] और तुम्हें बहुत कुछ मुंह मांगा दिया और अगर

تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾ ع وَاِذْ

अल्लाह की ने'मतें गिनो तो शुमार न कर सकोगे बेशक आदमी बड़ा ज़ालिम बड़ा नाशुक्रा है[82] और याद करो

قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ

जब इब्राहीम ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब इस शहर[83] को अमान वाला कर दे[84] और मुझे और मेरे बेटों को बुतों के

الْاَصْنَامَ ﴿٣٥﴾ رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ

पूजने से बचा[85] ऐ मेरे रब बेशक बुतों ने बहुत लोग बहका दिये[86] तो जिस ने मेरा साथ दिया[87]

فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٦﴾ رَبَّنَاۤ اِنِّيْۤ اَسْكَنْتُ

वोह तो मेरा है और जिस ने मेरा कहा न माना तो बेशक तू बख़्शने वाला मेहरबान है[88] ऐ मेरे रब मैं ने अपनी कुछ औलाद

مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا

एक नाले में बसाई जिस में खेती नहीं होती तेरे हुरमत वाले घर के पास[89] ऐ हमारे रब इस लिये कि वोह[90]

उन से नफ़्अ़ उठाते हो **81 :** आराम और काम के लिये **82 :** कि कुफ़्र व मा'सियत का इरतिकाब कर के अपने ऊपर ज़ुल्म करता है और अपने रब की ने'मत और उस के एह़सान का ह़क़ नहीं मानता। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि इन्सान से यहां अबू जहल मुराद है। ज़ज्जाज का क़ौल है कि इन्सान इस्मे जिन्स है (या'नी मुसल्मान हो या काफ़िर) और यहां इस से काफ़िर मुराद है। **83 :** मक्कए मुकर्रमा **84 :** कि क़ुर्बे क़ियामत दुन्या के वीरान होने के वक़्त तक येह वीरानी से मह़फ़ूज़ रहे या इस शहर वाले अम्न में हों। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की येह दुआ़ मुस्तजाब हुई अल्लाह तआ़ला ने मक्कए मुकर्रमा को वीरान होने से अम्न दिया और कोई भी इस के वीरान करने पर क़ादिर न हो सका और इस को अल्लाह तआ़ला ने ह़रम बनाया कि इस में न किसी इन्सान का ख़ून बहाया जाए न किसी पर ज़ुल्म किया जाए न वहां शिकार मारा जाए न सब्ज़ा काटा जाए। **85 :** अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام बुत परस्ती और तमाम गुनाहों से मा'सूम हैं, ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का येह दुआ़ करना बारगाहे इलाही में तवाज़ोअ़ व इज़्हारे एह़तियाज के लिये है कि बा वुजूदे कि तू ने अपने करम से मा'सूम किया लेकिन हम तेरे फ़ज़्लो रह़मत की त़रफ़ दस्ते एह़तियाज दराज़ रखते हैं। **86 :** या'नी उन की गुमराही का सबब हुए कि वोह उन्हें पूजने लगे **87 :** और मेरे अ़क़ीदे व दीन पर रहा **88 :** चाहे तो उसे हिदायत करे और तौफ़ीक़े तौबा अ़त़ा फ़रमाए। **89 :** या'नी उस वादी में जहां अब मक्कए मुकर्रमा है। और ज़ुर्रिय्यत से मुराद ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام हैं, आप सर ज़मीने शाम में ह़ज़रते हाजिरा के बत़ने पाक से पैदा हुए, ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات की बीवी ह़ज़रते सारह के कोई औलाद न थी इस वज्ह से उन्हें रश्क पैदा हुवा और उन्हों ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से कहा कि आप हाजिरा और इन के बेटे को मेरे पास से जुदा कर दीजिये, ह़िक्मते इलाही ने येह एक सबब पैदा किया था। चुनान्चे वह़्य आई कि आप ह़ज़रते हाजिरा व इस्माईल को उस सर ज़मीन में ले जाएं (जहां अब मक्कए मुकर्रमा है) आप इन दोनों को अपने साथ बुराक़ पर सुवार कर के शाम से सर ज़मीने ह़रम में लाए और का'बए मुक़द्दसा के नज़्दीक उतारा, यहां उस वक़्त न कोई आबादी थी, न कोई चश्मा, न पानी, एक तोशादान में खजूरें और एक बरतन में पानी उन्हें दे कर आप वापस हुए और मुड़ कर उन की त़रफ़ न देखा, ह़ज़रते हाजिरा वालिदए इस्माईल ने अ़र्ज़ किया कि आप कहां जाते हैं और हमें इस वादी में बे अनीस व रफ़ीक़ (बे यारो मददगार) छोड़े जाते हैं? लेकिन आप ने इस का कुछ जवाब न दिया और उन की त़रफ़ इल्तिफ़ात (ध्यान) न फ़रमाया। ह़ज़रते हाजिरा ने चन्द मरतबा येही अ़र्ज़ किया और जवाब न पाया तो कहा कि क्या अल्लाह ने आप को इस का हुक्म दिया है? आप ने फ़रमाया : हां! उस वक़्त उन्हें इत़्मीनान हुवा। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام चले गए और उन्हों ने बारगाहे इलाही में हाथ उठा कर येह दुआ़ की जो आयत में मज़्कूर है। ह़ज़रते हाजिरा

www.dawateislami.net

الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِیْۤ اِلَیْهِمْ وَ ارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ

नमाज़ क़ाइम रखें तो तू लोगों के कुछ दिल इन की त़रफ़ माइल कर दे[91] और इन्हें कुछ फल खाने को दे[92]

لَعَلَّهُمْ یَشْكُرُوْنَ ﴿۳۷﴾ رَبَّنَاۤ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِیْ وَ مَا نُعْلِنُ ؕ وَ مَا یَخْفٰی

शायद वोह एह़सान मानें ऐ हमारे रब तू जानता है जो हम छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते और अल्लाह पर

عَلَی اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ فِی الْاَرْضِ وَ لَا فِی السَّمَآءِ ﴿۳۸﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ

कुछ छुपा नहीं ज़मीन में न आस्मान में[93] सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने

وَهَبَ لِیْ عَلَی الْكِبَرِ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبِّیْ لَسَمِیْعُ الدُّعَآءِ ﴿۳۹﴾

मुझे बुढ़ापे में इस्माईल व इस्ह़ाक़ दिये बेशक मेरा रब दुआ़ सुनने वाला है

رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوةِ وَ مِنْ ذُرِّیَّتِیْ ۖۗ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿۴۰﴾

ऐ मेरे रब मुझे नमाज़ का क़ाइम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को[94] ऐ हमारे रब और मेरी दुआ़ सुन ले

ع ٦/١٨ رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیَّ وَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿۴۱﴾ وَ لَا

ऐ हमारे रब मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को[95] और सब मुसल्मानों को जिस दिन हिसाब क़ाइम होगा और हरगिज़

अपने फ़रज़न्द ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام को दूध पिलाने लगीं, जब वोह पानी ख़त्म हो गया और प्यास की शिद्दत हुई और साहिब ज़ादे का ह़ल्क़ शरीफ़ भी प्यास से ख़ुश्क हो गया तो आप पानी की जुस्तजू या आबादी की तलाश में सफ़ा व मर्वह के दरमियान दौड़ीं, ऐसा सात मरतबा हुवा। यहां तक कि फ़िरिश्ते के पर मारने से या ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام के क़दमे मुबारक से उस ख़ुश्क ज़मीन में एक चश्मा (ज़मज़म) नुमूदार हुवा। आयत में ह़ुरमत वाले घर से बैतुल्लाह मुराद है जो तूफ़ाने नूह़ से पहले का'बए मुक़द्दसा की जगह था और तूफ़ान के वक़्त आस्मान पर उठा लिया गया, ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का येह वाक़िआ़ आप के आग में डाले जाने के बा'द हुवा, आग के वाक़िए में आप ने दुआ़ न फ़रमाई थी और इस वाक़िए में दुआ़ की और तज़र्रोअ़ किया (या'नी गिर्या व ज़ारी की)। अल्लाह तआ़ला की कारसाज़ी पर ए'तिमाद कर के दुआ़ न करना भी तवक्कुल और बेहतर है लेकिन मक़ामे दुआ़ इस से भी अफ़्ज़ल है तो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات का इस आख़िर वाक़िए में दुआ़ फ़रमाना इस लिये है कि आप मदारिजे कमाल (कमाल के दरजात) में दम बदम तरक़्क़ी पर हैं। **90 :** या'नी ह़ज़रते इस्माईल और इन की औलाद इस वादिये बे ज़राअ़त में तेरे ज़िक्र व इबादत में मश्ग़ूल हों और तेरे बैते ह़राम के पास **91 :** अतराफ़ व बिलाद से यहां आएं और उन के क़ुलूब इस मकाने त़ाहिर के शौक़े ज़ियारत में खिंचें। इस में ईमानदारों के लिये येह दुआ़ है कि उन्हें बैतुल्लाह का ह़ज मुयस्सर आए और अपनी यहां रहने वाली ज़ुर्रिय्यत (नस्ल) के लिये येह कि वोह ज़ियारत के लिये आने वालों से मुन्तफ़ेअ़ होते रहें, ग़रज़ येह दुआ़ दीनी दुन्यवी बरकात पर मुश्तमिल है। ह़ज़रत की दुआ़ क़बूल हुई और क़बीलए जुरहुम ने इस त़रफ़ से गुज़रते हुए एक परिन्द देखा तो उन्हें तअ़ज्जुब हुवा कि बयाबान में परिन्द कैसा शायद कहीं चश्मा नुमूदार हुवा, जुस्तजू की तो देखा कि ज़मज़म शरीफ़ में पानी है, येह देख कर उन लोगों ने ह़ज़रते हाजिरा से वहां बसने की इजाज़त चाही, उन्हों ने इस शर्त़ से इजाज़त दी कि पानी में तुम्हारा ह़क़ न होगा, वोह लोग वहां बसे और ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जवान हुए तो उन लोगों ने आप के सलाह़ व तक़्वा को देख कर अपने ख़ानदान में आप की शादी कर दी और ह़ज़रते हाजिरा का विसाल हो गया। इस त़रह़ ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की येह दुआ़ पूरी हुई और आप ने दुआ़ में येह भी फ़रमाया **92 :** इसी का समरा (नतीजा) है कि फ़ुसूले मुख़्तलिफ़ा (मुख़्तलिफ़ मौसिमों) रबीअ़ व ख़रीफ़ व सैफ़ व शिता (बहार व ख़ज़ां, गर्मी व सर्दी) के मेवे वहां बयक वक़्त मौजूद मिलते हैं। **93 :** ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने एक और फ़रज़न्द की दुआ़ की थी अल्लाह तआ़ला ने क़बूल फ़रमाई तो आप ने उस का शुक्र अदा किया और बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ किया **94 :** क्यूं कि बा'ज़ की निस्बत तो आप को ब ए'लामे इलाही (रब तआ़ला के आगाह फ़रमा देने से) मा'लूम था कि काफ़िर होंगे, इस लिये बा'ज़ ज़ुर्रिय्यत के वासिते नमाज़ों की पाबन्दी व मुहाफ़ज़त की दुआ़ की। **95 :** बशर्ते ईमान या मां बाप से ह़ज़रते आदम व ह़व्वा मुराद हैं।

تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ؕ۬ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ

अल्लाह को बे ख़बर न जानना ज़ालिमों के काम से[96] उन्हें ढील नहीं दे रहा है मगर ऐसे दिन के लिये

تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ۙ ﴿۴۲﴾ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ

जिस में[97] आंखें खुली की खुली रह जाएंगी बे तहाशा दौड़ते निकलेंगे[98] अपने सर उठाए हुए कि उन की पलक

اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ؕ ﴿۴۳﴾ وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ

उन की तरफ़ लौटती नहीं[99] और उन के दिलों में कुछ सकत (ताक़त) न होगी[100] और लोगों को उस दिन से डराओ[101] जब उन पर

الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَاۤ اَخِّرْنَاۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ

अज़ाब आएगा तो ज़ालिम[102] कहेंगे ऐ हमारे रब थोड़ी देर हमें[103] मोहलत दे कि हम तेरा

دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْۤا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ

बुलाना मानें[104] और रसूलों की गुलामी करें[105] तो क्या तुम पहले[106] क़सम न खा चुके थे कि हमें दुन्या से कहीं

زَوَالٍ ۙ ﴿۴۴﴾ وَّسَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ

हट कर जाना नहीं[107] और तुम उन के घरों में बसे जिन्हों ने अपना बुरा किया था[108] और तुम पर ख़ूब खुल गया

كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿۴۵﴾ وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ

हम ने उन के साथ कैसा किया[109] और हम ने तुम्हें मिसालें दे दे कर बता दिया[110] और बेशक वोह[111] अपना सा दाउं (फ़रेब) चले[112]

وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ؕ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿۴۶﴾ فَلَا

और उन का दाउं अल्लाह के क़ाबू में है और उन का दाउं कुछ ऐसा न था कि जिस से येह पहाड़ टल जाएं[113] तो हरगिज़

96 : इस में मज़्लूम को तसल्ली दी गई कि अल्लाह तआला ज़ालिम से उस का इन्तिक़ाम लेगा 97 : होल व दहशत से 98 : हज़रते इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ जो उन्हें अ़र्सए महशर की तरफ़ बुलाएंगे। 99 : कि अपने आप को देख सकें 100 : शिद्दते हैरत व दहशत से। क़तादा ने कहा कि दिल सीनों से निकल कर गलों में आ फंसेंगे न बाहर निकल सकेंगे न अपनी जगह वापस जा सकेंगे। मा'ना येह हैं कि उस दिन की शिद्दते होल व दहशत का येह आ़लम होगा कि सर ऊपर उठे होंगे, आंखें खुली की खुली रह जाएंगी दिल अपनी जगह पर क़रार न पा सकेंगे। 101 : या'नी कुफ़्फ़ार को क़ियामत के दिन का ख़ौफ़ दिलाओ 102 : या'नी काफ़िर 103 : दुन्या में वापस भेज दे और 104 : और तेरी तौहीद पर ईमान लाएं 105 : और हम से जो क़ुसूर हो चुके उस की तलाफ़ी करें, इस पर उन्हें ज़ज्रो तौबीख़ की जाएगी और फ़रमाया जाएगा 106 : दुन्या में 107 : और क्या तुम ने बअ़्स व आख़िरत का इन्कार न किया था 108 : कुफ़्र व मआ़सी का इरतिकाब कर के जैसे कि क़ौमे नूह व आ़द व समूद वग़ैरा। 109 : और तुम ने अपनी आंखों से उन की मनाज़िल में अ़ज़ाब के आसार और निशान देखे और तुम्हें उन की हलाकत व बरबादी की ख़बरें मिलीं, येह सब कुछ देख कर और जान कर तुम ने इब्रत न हासिल की और तुम कुफ़्र से बाज़ न आए। 110 : ताकि तुम तदबीर करो और समझो और अ़ज़ाब व हलाक से अपने आप को बचाओ। 111 : इस्लाम के मिटाने और कुफ़्र की ताईद करने के लिये नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ 112 : कि उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के क़त्ल करने या क़ैद करने या निकाल देने का इरादा किया। 113 : या'नी आयाते इलाही और अह़कामे शरए मुस्तफ़ाई जो अपने क़ुव्वतो सबात में ब मन्ज़िला मज़बूत पहाड़ों के हैं। मुहाल है कि काफ़िरों के मक्र और उन की हीला अंगेज़ियों से अपनी जगह से टल सकें।

تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ؕ﴿۴۷﴾

ख़याल न करना कि **अल्लाह** अपने रसूलों से वा'दा ख़िलाफ़ करेगा[114] बेशक **अल्लाह** ग़ालिब है बदला लेने वाला

یَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَیْرَ الْاَرْضِ وَ السَّمٰوٰتُ وَ بَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ

जिस दिन[115] बदल दी जाएगी ज़मीन इस ज़मीन के सिवा और आस्मान[116] और लोग सब निकल खड़े होंगे[117] एक **अल्लाह** के सामने

الْقَهَّارِ ﴿۴۸﴾ وَ تَرَى الْمُجْرِمِیْنَ یَوْمَىٕذٍ مُّقَرَّنِیْنَ فِی الْاَصْفَادِ ۚ﴿۴۹﴾

जो सब पर ग़ालिब है और उस दिन तुम मुजरिमों[118] को देखोगे कि बेड़ियों में एक दूसरे से जुड़े होंगे[119]

سَرَابِیْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّ تَغْشٰی وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ۙ﴿۵۰﴾ لِیَجْزِیَ اللّٰهُ كُلَّ

उन के कुरते राल के होंगे[120] और उन के चेहरे आग ढांप लेगी इस लिये कि **अल्लाह** हर जान को

نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِیْعُ الْحِسَابِ ﴿۵۱﴾ هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَ

उस की कमाई का बदला दे बेशक **अल्लाह** को हिसाब करते कुछ देर नहीं लगती येह[121] लोगों को हुक्म पहुंचाना है और

لِیُنْذَرُوْا بِهٖ وَ لِیَعْلَمُوْۤا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّ لِیَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۠﴿۵۲﴾

इस लिये कि वोह इस से डराए जाएं और इस लिये कि वोह जान लें कि वोह एक ही मा'बूद है[122] और इस लिये कि अ़क़्ल वाले नसीहत मानें

ع ۱۹

ایاتها ۹۹ | ۱۵ سُوْرَةُ الْحِجْرِ مَكِّيَّةٌ ۵۴ | رکوعاتها ۶

सूरए हिज्र मक्किय्या है, इस में निनानवे आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रहम वाला[1]

الٓرٰ ۟ تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ وَ قُرْاٰنٍ مُّبِیْنٍ ﴿۱﴾

येह आयतें हैं किताब और रोशन क़ुरआन की

114 : येह तो मुम्किन ही नहीं वोह ज़रूर वा'दा पूरा करेगा और अपने रसूल की नुसरत फ़रमाएगा, इन के दीन को ग़ालिब करेगा, इन के दुश्मनों को हलाक करेगा **115 :** इस दिन से रोज़े क़ियामत मुराद है। **116 :** ज़मीन व आस्मान की तब्दीली में मुफ़स्सिरीन के दो क़ौल हैं : **एक** येह कि इन के औसाफ़ बदल दिये जाएंगे मसलन ज़मीन एक सत्ह़ हो जाएगी न इस पर पहाड़ बाक़ी रहेंगे न बुलन्द टीले न गहरे ग़ार न दरख़्त न इमारत न किसी बस्ती और इक़्लीम का निशान और आस्मान पर कोई सितारा न रहेगा और आफ़्ताब, माहताब की रोशनियां मा'दूम होंगी, येह तब्दीली औसाफ़ की है ज़ात की नहीं। **दूसरा** क़ौल येह है कि आस्मान व ज़मीन की ज़ात ही बदल दी जाएगी, इस ज़मीन की जगह एक दूसरी चांदी की ज़मीन होगी, सफ़ेद व साफ़ जिस पर न कभी ख़ून बहाया गया हो न गुनाह किया गया हो और आस्मान सोने का होगा। येह दो क़ौल अगर्चे ब ज़ाहिर बाहम मुख़ालिफ़ मा'लूम होते हैं मगर इन में से हर एक सह़ीह़ है और वज्हे जम्अ़ येह है कि अव्वल तब्दीले सिफ़ात होगी और दूसरी मरतबा बा'दे ह़िसाब तब्दीले सानी होगी इस में ज़मीन व आस्मान की ज़ातें ही बदल जाएंगी। **117 :** अपनी क़ब्रों से **118 :** या'नी काफ़िरों **119 :** अपने शयात़ीन के साथ बंधे हुए **120 :** सियाह रंग बदबूदार जिन से आग के शो'ले और ज़ियादा तेज़ हो जाएं। (مدارک وخازن)